

बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति का भौगोलिक विस्तार



डॉ० रामकांत राम

इतिहास विभाग,

पी.आर.आर.डी. कॉलेज, बैरगनिया (सीतामढ़ी)

डॉ० एच.पी. चक्रवर्ती के अनुसार भारत के समुन्द्रतटीय भू-भागों को जीतकर आक्रमणकारी आर्यों ने मूल भारतीयों से जलयान संचालन की तकनीक सीखी थी। महोदय डी.जी.ई. हाल दक्षिणी एशिया के साथ भारत के सम्बन्धों को ऐतिहासिक युग से पहले से मानते हैं। भारत के सांस्कृतिक प्रचार के पहले ही व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हो चुके हैं और भारतीयों ने दक्षिणी पूर्वी इतिहास के बंदरगाहों के पास अपने व्यापारिक उपनिवेश स्थापित कर लिए थे उन भू-भागों के सवर्ण गर्म मसाले सुगन्धित लकड़ी एवं अन्य सुगन्धित द्रव्यों की बहुलता ने भारतीय व्यापारियों को आकर्षित किया था। भारतीय संस्कृति के देवदूत (बौद्ध भिक्षु) इन्हीं व्यापारियों के साथ गये थे दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों की समुंद्री यात्रा जलयानों से पूरी की जाती थी। उन्हें कुशल नाविक चलाते थे, जिन्हें संसिद्ध यान पात्रिक कहा जाता था। संस्कृत बौद्ध साहित्य में इन द्वीप समूहों की यात्राओं का विवरण प्राप्त होता है।

दक्षिणी पूर्वी एशिया के उन देशों, राज्यों, नगरों, पर्वतों और नदियों का वर्णन किया गया है, जिनके नाम भारत के ऐतिहासिक भूगोल के आधार पर रखे गये हैं और जिनका उल्लेख बौद्ध साहित्य में होता है।

दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों में वर्मा भारत के समीप स्थित देश है जिसका उल्लेख है कि सम्राट अशोक के समय सम्पन्न तृतीय बौद्ध संगीति के निर्णयानुसार वर्मा में धर्म प्रचार भिक्षु मण्डल गया था। वर्मा की अनुश्रुतियों में यह माना जाता है कि एक शाक्य राजकुमार अभिराज ने भारत से जाकर उतरी बर्मा में भारतीय उपनिवेश की स्थापना की थी। उसने संकिस्सा नामक

नगर वसा कर उसे अपनी राजधानी बनाया था। यह संकिस्सा नगर इरावदी नदी के उपरी घाटी में स्थित था। इस संकिस्सा नगर को तगौग कहा जाता है। संकिस्सा भारत के प्रसिद्ध बौद्ध केंद्र रहा है जो आठ प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थों में से एक माना जाता है। इस समय संकिस्सा के ध्वंसावशेष उत्तर प्रदेश के जिला फरुदाबाद में स्थित है।

बौद्ध का महातीर्थ जिसे कुशीनगर अथवा कुशीनारा के नाम से जाना जाता है यह पूर्वी उत्तर प्रदेश में अवस्थित है। बुद्धयुगीन नाम कुशीनारा मल्लो का एक महत्वपूर्ण नगर था। इसका महत्व बुद्ध के अंतिम उपदेश यहाँ देने और यहाँ इसी स्थल पर महापरिनिर्वाण होने के कारण और बढ़ गया। भगवान आनंद के पूछने पर इस स्थल की ऐतिहासिकता जो बतलाई है वह अत्यंत ही दुर्लभ और स्मरणीय हैं। उनका कहना है कि पूर्व युग में इसका नाम कुशावती था। महासुदर्शन नामक राजा कभी यहाँ राज करता था। यह नगर उस चक्रवर्ती राजा का प्रमुख और प्रिय क्षेत्र था। पूर्वकाल में यहाँ बुद्ध पैदा हो चुके हैं। बुद्ध इसी पवित्र स्थल पर दो साल वृक्षों के नीचे की छाया में महापरिनिर्वाण प्राप्त कर गये थे। आज यह महाक्षेत्र बड़ा ही उपेक्षित दिखाई देता है इसका सब से बड़ा कारण आस पास कोई बड़ा नगर का न होना है। कई बार भारतीय पुरात्व विभाग इस स्थान का खुदाई करने का प्रयास किया किन्तु कार्य बीच में ही अधूरे छोड़ दिये गये जिसका नतीजा है आज भी यह महत्वपूर्ण स्थल गुमनामी के अंधेरा में हैं। यह शहर पूर्वी उत्तर प्रदेश के मुख्य शहर गोरखपुर से 53 किलोमीटर पूर्व तथा देवरिया शहर से 35 किलोमीटर उत्तर दिशा में अवस्थित हैं। इन दोनों ही शहरों से सड़कमार्ग है भगवान बुद्ध ने महापरिनिर्वाण सुत में अपने अनुयायियों को अपने जीवन से संबंधित चार महत्वपूर्ण स्थानों में कुशीनारा को भी बताया है जिसका दर्शन पुण्यकारी हैं। चीनी यात्री हेनसांग जब-जब 620 से 644 के बीच भारत में थे तो उन्होंने यहाँ के सभी खण्डहरों को देखा था।

चीनी यात्री इतिसंग अपने यात्रा विवरण में बतलाया है कि वर्मी परम्परा के अनुसार राजा महासम्भव ने बुद्ध के साठवें वर्ष थेर खेत्तर नामक नगर बसाया था और रोम राजवंश की स्थापना की थी। चीनी यात्री ने यह भी लिखा है कि श्री वर्ष थेर खेत्तर नामक नगर बसाया था और रोम राजवंश की स्थापना की थी। चीनी यात्री ने यह भी लिखा है कि श्री क्षेत्र के दक्षिण-पूर्व में लंकासु और लंकासु के पूर्व में डोवरावती नगरी स्थित थी। बंगाल और वर्मा के

मध्य-उत्तर-दक्षिण साढ़े-तीन सौ मील लम्बी अरकान योमा की पर्वत श्रेणी दोनों देशों को पृथक करती है। विभिन्न युगों में इस भू-भाग की राजधानी रमावती तथा धान्यवती नगर का स्मरण दिलाती है जो आन्ध्र प्रदेश में बौद्ध केंद्र अमरावती के नाम से प्रसिद्ध है।

कलान्तर में अरकान के दूसरे राजा ने आठवीं शताब्दी में नवीन राजधानी की स्थापना की जिसका नाम पूर्वी भारत के प्रसिद्ध नगर वैशाली के नाम पर ही वैशाली रखा गया। राजा ने अपने को श्री धर्मराजानुवंश कहा। वैशाली नगरी के अवशेष बेथली नामक स्थान पर खोजा गया है। यह स्थान माहिंग के उत्तर-पश्चिम में आठ मील दूर स्थित हैं। वर्मा में भारतीय जनपदों और नगरों के नाम पर केवल उपनिवेशों और नगरों के ही नाम नहीं रखे गये बल्कि भारत के नदियों पर वहाँ भी नदियों का नामाकरण किये गये। वर्मा की सब से लम्बी नदी का नाम इरावदी नदी रखा गया। इस नदी में 800 मील तक जलयान आ जा सकते हैं। बड़े-बड़े नगर इस नदी के किनारे स्थित हैं। ज्ञातव्य हो कि इरावती प्राचीन भारत की प्रसिद्ध नदी थी। जिसे इस समय रापती नदी कहते हैं, जो बहराइया गोंडा बस्ती और गौरखपुर जिले में होकर बहती है।

डॉ० आर.सी. मजूमदार ने ठीक ही लिखा है कि दक्षिण-पूर्व एशिया के इस भू-भाग में नये भारत को बसाने का प्रयास किया गया।

तभी तो भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध और धार्मिक नगरों और राज्यों का नाम पर वर्मा में भी नगर और राज्य बसाये गये। इनमें उपरान्त असितोजन, अवन्ति, वाराणसी, चम्पानगर, डोवारवती, गन्धार, कम्बोज, कैलाश, या कलास, कुसुमपुर, मिथला, पुस्कर, पुस्करावती, राजगृह संकास, उत्कल, वैशाली का विशेष उल्लेख हैं।

दक्षिण पूर्व एशिया के जिस देश को इस समय थाइलैण्ड कहते हैं उसे पहले सियाम कहते थे। थाई लोगों के नाम पर ही इसे थाइलैण्ड की संज्ञा दी गई। थाइलैण्ड में सबसे शक्तिशाली राज्य युनान राज्य स्थापित हुआ। इस देश के भी राजनीतिक भूगोल पर बौद्ध धर्म का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। भारतीय जनपदों के नाम पर वहाँ के राज्यों के नगर गान्धार राज्य विदेह राज्य, कौशाम्बी राज्य, आलवी राज्य अयोध्या राज्य आदि नाम रखे गये।

युनान के थाई लोग भारतीय संस्कृति से बहुत अधिक प्रभावित थे। इन्होंने गन्धार राज्य की स्थापना की जिसे चीनी विद्वानों मान-याओ ने कहा है। इसी के

कातिल्य भाग में विदेह राज्य स्थापित हुआ, जिसकी राजधानी मिथला थी। इसी भू-भाग में प्रसिद्ध पीपल गुहा, बोधि, दुम तथा गिरिधकतक पर्वत आदि नामों से बौद्ध केंद्र स्थापित हुये थे। केवल राजधानियों का नाम ही नहीं नदियों, पर्वतों, राज्यों कस्बों के साथ दैनिक एवं बहुजन कल्याण के नाम भी भारतीय नामों के आधार पर रखे गये थे। इस प्रकार जिस देश को उतरी और दक्षिणी वियतनाम कहते हैं उसका प्राचीन नाम चम्पा या अनाम था। यह पश्चिम में पर्वतों और पूर्व में समुद्र के मध्य लम्बी पटी के रूप में स्थित है। ज्ञात है कि चम्पा पूर्वी भारत का प्रसिद्ध नगर और व्यापारिक केन्द्र था। यही पर अंग महाजनपद का अधिष्ठान भी था। इसी के नाम पर संदर्भित भू-भाग में पहले पहुँचने वाले भारतीय ने उस भू-भाग का नाम भी चम्पा रखा। उसकी राजधानी का नाम भी चम्पा रखा गया। हवेनसांग के अनुसार महाचम्पा हसनपुर के पूर्व में स्थित था। चीनियों ने इसे सि-आंगलिन कहा है। इस नगर की पहचान कुवांग नाम के कुछ दूर दक्षिण में स्थित त्रा - क्यू से की जाती है। राजभद्रवर्मन, गंगाराज, पृथ्वीनंद, रानी गौड़ेन्द्र लक्ष्मी नाम भी भारत के ऐतिहासिक भूगोल से प्रभावित हैं।

सुमात्रा के पालोम वंश से अमरावती कला की बनी हुई भगवान बुद्ध की एक प्रस्तर प्रतिमा प्राप्त हुई है।

सुमात्रा के पूर्व में बोर्निया द्वीप स्थित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से दक्षिण पूर्व एशिया के द्वीपों में सबसे बड़ा है भारतीय इतिहास में उल्लेखित वरुण द्वीप ही बोर्निया है जिसे कालम भी माँसा तथा ब्रह्मपुराण में भारत के नव भेदों में से एक बतलाया गया है। बोर्निया में प्रभावित सम्पत्ति नदी का नाम भारत की सांप नदी के नाम पर रखा गया प्रतीत होता है। सांप ब्रह्मपुत्र का ही पर्वतीय हिस्से का नाम है। केदाह द्वीप के अभिलेखों की भाँति बोर्निया के भी अभिलेखों में बौद्ध धर्म का प्रसिद्ध सूत्र - “ये धर्म हेतुप्रभवा तेषा हेतुं तथागतो हवदत्त” उल्लेखित मिलता है।

दक्षिण पूर्व एशिया के द्वीपों में बाली, सेलेवस और फिलीपीन भी सम्मिलित हैं। यद्यपि बाली सबसे छोटा द्वीप है। लेकिन इसके निवासी अपने को पौराणिक हिन्दू मानते हैं। यहां के लोग कपास को कोपेई कहते हैं कपास भारत से सबसे पहले यहां पहुंची थी। इत्सिंग ने इस द्वीप का नाम पो.ली-लिखा है। बोर्निया के पूर्व तथा फिलीपीन के दक्षिण में सेलेवस या सलबेसी द्वीप स्थित है। सुलबेसी का अर्थ लौह द्वीप यहाँ के करमा नदी के किनारे स्थित सेमपागा स्थान से खुदाई में

पीतल की एक की अतीव सुन्दर मूर्ति मिली है जिसकी बनावट पर कुषाणकालीन मथुरा कला का तथा सजावट पर अमरावती कला का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है।

इस प्रकार दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों के ऐतिहासिक और राजनैतिक भूगोल पर भारतीय बौद्ध भूगोल का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। भारत के प्रसिद्ध बौद्ध नगरों, तीर्थों, नदियों पर्वतों के नाम पर उन देशों के प्रसिद्ध नगरों, तीर्थों नदियों और पर्वतों के नाम रखे गये थे। वस्तुतः यह भारतीय संस्कृति का भौगोलिक विस्तार ही था।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. दी.बु.री. पृष्ठ 43-44.
2. हि. का. फा. ई. पू. 66.
3. हि. का. फा. ई. पू. 50.
4. द. पू. ए. या. सं. पू. 36.
5. हि. का. फा. ई. पू. 63.